प्रेस विज्ञप्ति

राज भवन, राँची

दिनांक : 07 अगस्त, 2025 :-

(1) राज्यपाल महोदय ने 'राष्ट्रीय हस्तकरघा दिवस' पर हस्तकरघा क्षेत्र को आत्मनिर्भर भारत की बुनियाद बताया।

माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज विवर्स डेवलेपमेंट एण्ड रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन (WDRO) एवं बुनकर प्रकोष्ठ द्वारा 12वें राष्ट्रीय हस्तकरघा दिवस के अवसर पर डोरंडा महाविद्यालय, रांची में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि हस्तकरघा केवल एक कला नहीं, यह हमारी सभ्यता, संस्कृति और परंपरा का जीवंत प्रतीक है। हर धागा, हर बुनाई हमारी लोक-कथाओं और रीति-रिवाजों की अनूठी कहानी कहती है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत का उत्सव मनाया जा रहा है, बल्कि उन लाखों बुनकर परिवारों को सम्मान भी दिया जा रहा है, जो आत्मनिर्भर भारत की नींव को सुदृढ़ कर रहे हैं। उन्होंने इस अवसर

पर माननीय प्रधानमंत्री जी के ‘वोकल फॉर लोकल’ और ‘हैंडलूम फॉर होम’ जैसे अभियानों का उल्लेख करते हुए कहा कि इन पहलों से देश में स्वदेशी वस्त्रों के प्रति सम्मान का भाव और बढ़ा है।

माननीय राज्यपाल ने अपने पूर्व के अनुभव साझा करते हुए कहा कि जब मैं वस्त्र मंत्रालय में था, तब देशभर के बुनकरों और हस्तशिल्पियों की समस्याओं को नजदीक से समझने और उनके समाधान के लिए कार्य करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि मेरे द्वारा कौशल विकास, तकनीकी सहायता और बाज़ार उपलब्धता के माध्यम से बुनकरों के सशक्तिकरण की दिशा में ठोस प्रयास किए गए।"

राज्यपाल महोदय ने झारखंड की विशिष्ट हस्तकरघा परंपराओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तसर रेशम और कत्था कढ़ाई जैसे शिल्प राज्य की पहचान हैं और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भी इनकी विशिष्ट छवि बनी है। उन्होंने हाल ही में इस क्षेत्र पर आधारित दो फिल्मों "संगठन से सफलता" तथा "फैशन के लिए खादी" का उल्लेख करते हुए कहा कि ये फिल्में हथकरघा के सामाजिक और आर्थिक महत्व को जनमानस के समक्ष लाने में सहायक रही हैं।

माननीय राज्यपाल ने WDRO एवं बुनकर प्रकोष्ठ की पहल की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि यह

मंच स्थानीय शिल्पियों, नवाचारियों और युवा उद्यमियों को जोड़ने में सफल होगा। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि 'हैंडलूम फॉर होम' को केवल नारा नहीं, बल्कि दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। यही सच्चा सम्मान होगा हमारे बुनकरों के परिश्रम का। उक्त अवसर पर उन्होंने बुनकरों को सम्मानित भी किया।

राज्यपाल महोदय ने अपने संबोधन के प्रारंभ में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनकी सादगी, तपस्या और जनजातीय समाज के लिए समर्पित जीवन को सदैव याद किया जाएगा।

---

(2) **माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार आज झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के पैतृक गाँव नेमरा (रामगढ़ जिला) पहुँचे। उन्होंने वहाँ पहुँचकर दिवंगत शिबू सोरेन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक-संतप्त परिजनों से भेंट कर अपनी गहरी संवेदना प्रकट की।**

राज्यपाल महोदय ने इस अवसर पर राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन एवं परिवार के अन्य सदस्यों को ढाँढस बंधाया। उन्होंने ग्रामवासियों से भी मुलाक़ात कर दुःख की इस घड़ी में अपनी सहभागिता व्यक्त की।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि वे और दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी लोकसभा में लंबे समय तक साथ कार्य किए, जिससे उन्हें निकट से जानते और समझते थे। दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी का जीवन जनजातीय अस्मिता, अधिकार और सामाजिक उत्थान को समर्पित रहा है। वे जनसेवा और संघर्ष के प्रतीक थे तथा सदैव समाज को जागरूक करने हेतु प्रयासरत रहते थे।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि दिशोम गुरु का निधन सामाजिक एवं राजनीतिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की तथा शोकाकुल परिवार को इस दुःख की घड़ी में संबल प्रदान करने की कामना की।

(3) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज 'धरित्री कला केंद्र' द्वारा जैप-1 सभागार में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम "अनुभूति" को संबोधित करते हुए कहा कि "अनुभूति" केवल कला की प्रस्तुति नहीं, बल्कि यह हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की निरंतरता का एक जीवंत प्रतीक है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं और युवा पीढ़ी में अनुशासन, संवेदनशीलता तथा राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करते हैं।

राज्यपाल महोदय ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के 4 अगस्त को हुए निधन का उल्लेख करते हुए कहा कि यह केवल एक राजनीतिक व्यक्तित्व की विदाई नहीं, बल्कि जनजातीय चेतना और अस्मिता की एक जीवित प्रेरणा का अवसान है। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

माननीय राज्यपाल ने यह भी बताया कि केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ जी एवं उनकी पुत्रवधु गार्गी जी ने पूर्व में राज भवन में भेंट कर इस कार्यक्रम हेतु उन्हें सादर आमंत्रित किया था। उन्होंने कार्यक्रम की तिथि में परिवर्तन कर दिवंगत दिशोम गुरु जी के प्रति सम्मान प्रकट करने के निर्णय को एक भावपूर्ण और सराहनीय पहल बताया। अपने उद्बोधन में राज्यपाल महोदय ने गार्गी जी द्वारा अपने गुरुजनों पद्म विभूषण

पं. बिरजू महाराज, पं. मुन्ना शुक्ला तथा मंजू मलकानी के प्रति अर्पित श्रद्धांजलि को गुरु-शिष्य परंपरा की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति बताया और कहा कि यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की आत्मा है। उन्होंने धरित्री कला केंद्र की पूरी टीम को शास्त्रीय नृत्य 'कत्थक' के माध्यम से भाव, भक्ति और भारतीयता को सजीव रूप में प्रस्तुत करने हेतु बधाई दी। उन्होंने कहा कि "नृत्यं संगीतं विना संस्कृतिः न पूर्णा भवति" - अर्थात् नृत्य और संगीत के बिना संस्कृति अधूरी है।

राज्यपाल महोदय ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के उस कथन का उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने कहा है कि "भारत की सांस्कृतिक शक्ति ही हमारी आत्मा है", और कहा कि आज का यह कार्यक्रम उन्हीं विचारों की एक सशक्त और जीवंत प्रस्तुति है। उन्होंने "अनुभूति" को एक प्रेरक परंपरा के रूप में आगे बढ़ते रहने की कामना करते हुए इसे नई पीढ़ी को सृजनशीलता, संस्कार और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने वाला मंच बताया। उन्होंने कलाकारों एवं आयोजकों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि झारखंड केवल खनिज संसाधनों के लिए नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक आत्मा के लिए भी पहचाना जाता है और ऐसे कार्यक्रम इस आत्मा को स्वर व गति प्रदान करते हैं।